OM - 20 - 2020 DELHI_Page 1 and 2 27/12/2019 1:57 PM Page 3

ब्रह्मपुर-ओडिशा। प्रभु उपहार रिट्रीट सेंटर के शिलापट्ट का अनावरण करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी। इस अवसर पर 31 कुमारियों ने अपना जीवन परमपिता शिव परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य हेतु समर्पित किया।

हम एक के हैं... इस रूप से मनायें शिवरात्रि

त्योहारों का भी मनुष्य के जीवन में अपना विशेष महत्व है। शिवरात्रि का महत्व अन्य सभी त्योहारों से विशेष है। शिवरात्रि विश्व के कल्याण का पर्व है। यह परमपिता शिव द्वारा संचालित एक ऐसे अहिंसायुक्त आंदोलन की याद दिलाता है, जो उन्होंने काम, क्रोध आदि विकारों की गुलामी से स्वतंत्रता दिलाने के लिए मानवों द्वारा कराया। यह त्योहार एक ऐसी कल्याणकारी, आध्यात्मिक क्रान्ति की याद दिलाता है, जिस द्वारा समूचे विश्व का कायाकल्प हो गया था और अब पुनः हो रहा है। अतः इस त्योहार के आने पर हम ज्ञान के झरोखे से विशेष तौर पर झांक कर देखते हैं कि हमने अपना कितना कल्याण किया है? और अन्य कितने लोगों का कल्याण करने के निमित्त बने हैं? यह त्योहार हमें शिव परमात्मा के गुणों से अपने गुणों की तुलना करने पर विवश करता है। ताकि हम देखें कि हम शिव वत्स, परमात्मा के गुणों के अनुरूप गुणगान कर रहे हैं, धारण कर रहे हैं या नहीं। शिवरात्रि के अवसर पर भक्त लोग तो शिव की महिमा के गीत गाते हैं, परंतु हमें अंतर्मुख होकर यह देखना होता है कि हम स्वयं गायन और महिमा के योग्य महान बन रहे हैं या नहीं।

नये जीवन का नया वर्ष

यदि हम यह कहें कि हमारे आध्यात्मिक जीवन का हर वर्ष शिवरात्रि से शुरू होता है तो सही होगा। दूसरे शब्दों में शिवरात्रि का त्योहार हमारे पुरुषार्थ पथ पर मील चिन्ह (माइल स्टोन) है। अतः शिवरात्रि के अवसर पर हमें लगता है कि हमारे आध्यात्मिक पुरुषार्थ के इतने वर्ष बीत गये और अब एक और वर्ष कम हो गया। अब शेष थोड़ा ही समय रह गया, अतः हम संकल्प को दृढ़ कर अमुक-अमुक कमज़ोरी को मिटाने में लग जाते हैं। तथा नये वर्ष के लिए ज्ञान-योग, दिव्य गुणों की धारणा तथा ईश्वरीय सेवा सम्बन्धित नया कार्यक्रम बनाते हैं।

फिर इस वर्ष में तो विशेष तौर पर सम्पूर्णता के समीप जाने के लिए कोई योजना अपने सामने रखनी चाहिए। जैसे भारत सरकार भी पंच वर्षीय योजना बनाती है और उसमें भी हर वर्ष का एक एजेंडा होता है कि हम इस वर्ष में हर एक को शिक्षित करेंगे। इसी तरह हम भी यदि सोलह कला सम्पूर्ण बनने के लिए चारो अध्ययन-विषयों से सम्बन्धित कोई सोलह-सूत्री कार्यक्रम अपने सामने रख लें तो अच्छा होगा। उसमें भी इस वर्ष महाशिवरात्रि पर हम पाँच विशेष बातों पर ध्यान केन्द्रित कर एक कार्यक्रम बनायें।

1. एक पढ़ो-एक पढ़ाओ

जैसे सरकार कहती है कि हर एक व्यक्ति कम से कम एक व्यक्ति को भी अक्षर ज्ञान दे तो देश में साक्षरता बढ़ेगी। लोग अनपढ़ से पढ़े हुए बनेंगे और अक्षर ज्ञान से उनके लिए ज्ञान के द्वार खुलेंगे। तथा उन्हें विद्या का नेत्र मिलेगा। अक्षर' शब्द का अर्थ है - अविनाशी'। जिसका 'क्षय' न हो। अक्षय तो 'आत्मा' और 'परमात्मा' ही है। अतः अच्छा हो जो हम में से हर कोई इस वर्ष, प्रतिदिन एक न एक नये व्यक्ति को अक्षर ज्ञान (अविनाशी ईश्वरीय ज्ञान) दें जिससे कि उसे 'ज्ञानचक्षु' मिले। हम सभी ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण हैं, अतः प्रभु परिचय देना हमारा दैनिक कर्त्तव्य है। इसलिए हमें यह नारा अपनाना चाहिए कि- 'एक पढ़ो-एक पढ़ाओ (ईच वन-टीच वन)'। अर्थात् हम प्रतिदिन एक मुरली पढ़ेंगे और कम से कम एक व्यक्ति को ज्ञान भी देंगे।

2. कला बढ़ाओ-कलावान बनाओ

जैसे सरकार ने भी स्किल इंडिया के तहत सभी को हुनर और कलायें सिखा रहे हैं ताकि सीखे हुए व्यक्ति अपने पांव पर खड़े हो सकें, आत्मनिर्भर हो सकें। हमें भी चाहिए कि हममें से किसी में भी जो भी कला है, हम स्वयं भी उसे और आगे बढ़ायें तथा एक न एक व्यक्ति को वह कला सिखायें ताकि हमारे यज्ञ का कार्य आत्मनिर्भर हो और सेवा कार्य सुचारू रूप से चल सके। जैसे कि यदि हम भाषण करना जानते हैं तो किसी दूसरे को भी भाषण करना सिखायें और उसे अभ्यास करायें।

3. हम दो-हमारे दो

फैमिली प्लानिंग के कार्यक्रम को तो सरकार ने भी बहुत महत्व दिया है, और हर नगर-नगर, गांव-गांव में भी, स्थान-स्थान पर लिखवा देते हैं 'हम दो-हमारे दो'। और तो और इसके एवज में कोई न कोई प्रलोभन भी देते हैं। जैसे कि टी.वी. आदि कुछ न कुछ सरकार की ओर से मुफ्त में दिया जायेगा। और दो से अधिक संतान पैदा करने वालों को कई प्रकार से तंग होना पड़ सकता है।

मालूम रहे कि अब हमें अपने आध्यात्मिक पुरुषार्थ के लिए ईश्वरीय सरकार ने यह नारा दिया है कि 'हम एक-हमारा एक'। अर्थात् हमें यह याद रखना चाहिए कि हम एक आत्मा हैं और एक शिव परमात्मा ही हमारे पिता हैं। अतः हमें एक उन्हीं की अव्यभिचारी स्मृति में रहना है। दूसरे शब्दों में हम यह भी नारा अपना सकते हैं कि 'हम एक-हमारे दो'। अर्थात् मुझ आत्मा को, एक जो हमारे प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में अलौकिक पिता मिले हैं, दूसरे ज्योति बिन्दु शिव के रूप में पारलौकिक पिता मिले हैं। उन दो ही को सदा सामने रखकर मुझे कर्म करने चाहिए। इसी को सामने रखते हुए हमें व्यर्थ संकल्पों का बर्थ कंट्रोल करना चाहिए। हमारा संकल्प सिर्फ एक (शिव परमात्मा) और दूसरा, प्रजापिता ब्रह्मा के बताये हुए रास्ते पर चलने के प्रति होना चाहिए। तो हम व्यर्थ संकल्पों से मुक्त रहेंगे।

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

4. लाइट और माइट में वृद्धि

जैसे सरकार की योजनाओं में एक-सूत्र यह भी होता है कि घर-घर में हम बिजली पहुंचायेंगे। और जगह-जगह सुपर थर्मल पावर या सोलर प्लांट के द्वारा बिजली के उत्पादन में वृद्धि करेंगे। ठीक उसी तरह हमें भी शिव परमात्मा ने कहा है कि आप भी अपना पावर हाउस बनाओ, अपनी लाइट और माइट को बढ़ाओ, ताकि आगामी 2500 वर्षों तक, बल्कि सारे कल्प के लिए आपके पास शक्ति रहे। आप स्वयं भी प्रकाशवान बनो और दूसरों को भी अपनी आत्मिक ऊर्जा द्वारा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाओ। तथा उन्हें शक्ति देकर विकारों पर विजय प्राप्त करने के योग्य बनाओ।

5. गरीबी हटाओ-अवगुण मिटाओ-दिव्यांगों की सेवा करो

जैसे सरकार के कार्यक्रम में निर्धनता को मिटाने के लिए तथा दिव्यांगों के लिए खास सहायता योजना का कार्यक्रम चलाती है, वैसे ही शिव परमात्मा ने हमें बताया है कि ज्ञान का हर प्वाइंट अनमोल रत्न है, योग की कमाई भी अविनाशी खज़ाना है तथा हरेक दिव्य गुण भी अनमोल है। अतः जिनके पास यह नहीं है, वे गरीब हैं। उन्हें यह ईश्वरीय वरदान देकर अब हमें गरीबी मिटानी है। हमारे अपने जीवन में यदि किसी गुण की कमी है तो उतने में हम गरीब हैं। अतः हमें अपने अवगुण मिटाकर अपनी भी गरीबी मिटानी है और दूसरे जो इन ज्ञान धन से गरीब हैं, उन्हें भी ज्ञान धन देकर उनकी भी गरीबी मिटानी है। जैसे कोई पिछड़े हैं, उनके लिए सहायता के कदम भी गवर्नमेंट उठाती है, उसी तरह शिव परमात्मा ने विकारों द्वारा विकलांग तथा पिछड़े लोगों की ज्ञान रत्नों द्वारा मदद करने को कहा है।

तो इस शिवरात्रि के त्योहार पर हम इस पाँच-सूत्री कार्यक्रम को स्वयं के प्रति भी अपनायें। ठीक रीति से निरीक्षण और परीक्षण करेंगे। और हम दूसरों की सेवा कर उन्हें भी योग्य बनायेंगे।

रामपुर-बसेरा(हि.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल महोदय भंडारू दत्तात्रय। साथ हैं ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. रीता तथ अन्य।

सिरसा-हरियाणा। गीता जयन्ति पर कार्यक्रम के दौरान उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ब्र.कु. बिन्दु को मोमेन्टो तथा गीता देकर सम्मानित करते हुए। साथ हैं डी.सी. अशोक गर्ग तथा अन्य।

ओडिशा। ओडिशा लेजिस्लेटिव एसेम्बली में विधायकों के साथ ज्ञानचर्चा करने व ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उनके साथ वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. शीलू दीदी,माउण्ट आबू तथा अन्य ब्र.कु. भाई।

चरखी दादरी-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का उद्घाटन करने के पश्चात् 'गीता ज्ञान प्रदर्शनी' का अवलोकन करते हुए उपायुक्त धर्मवीर सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष राम किशन शर्मा, एस.डी.एम. संदीप अग्रवाल, सी.टी.एम. डॉ. वीरेन्द्र सिंह तथा अन्य। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता।

सासनी-हाथरस(उ.प्र.)। गीता जयन्ति के अवसर पर 'अहिंसक गीता ज्ञान प्रदर्शनी' का शुभारंभ करते हुए कमिश्नर अजयदीप सिंह, डिप्टी कमिश्नर शमीम अहमद खान, ब्र.कु. शान्ता, ब्र.कु. कोमल तथा अन्य।

आगरा-शास्त्रीपुरम। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. रुपेश,मा.आबू, एस.एन. हॉस्पिटल की नर्सिंग ऑफिसर गौरी बहन, फाइज़र कंपनी की मैनेजर रश्मि सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. विनीता व अन्य।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। भारतीय कॉर्पोरेट कानून सेवा का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अधिकारियों के लिए कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय,भारत सरकार के सौजन्य से ओ.आर.सी. में आयोजित एक दिवसीय कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. विद्यात्री।

तोशाम-हरियाणा। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. रोशनी को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए प्राचार्य विकास कुमार, अध्यापिका मीनाक्षी वाधवा, अध्यापिका हरदीप कौर तथा अन्य।